पीएमओ डॉ. सविता ने ओपीडी में मरीज देखे

फ़रीदाबाद (म.मो.) बुधवार, चार जनवरी को बीके अस्पताल की पीएमओ डॉ. सविता यादव पहली बार ओपीडी में आकर बैठीं। उन्होंने मरीजों को भी देखा। विदित है कि डॉ. सविता एक बहुत ही बेहतरीन स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं। वे गायनेक्लॉजी में स्नातकोत्तर उपाधिधारक हैं। इतना कुछ होने के बावजूद वे सारा दिन अपने दफ्तर में बैठ कर गुजारती रही हैं। जाहिर है इसके चलते अस्पताल में आने वाली गरीब मरीज़ इनकी शफाकत से महरूम रह जाती हैं।

'मज़दूर मोर्चा' के बार-बार किये जाने वाले अनुरोध को स्वीकार करके उन्होंने मरीजों को देखने का जो निर्णय लिया है उसके लिये वे धन्यवाद की पात्र हैं। आशा है कि वे नियमित रूप से मरीजों को देख कर न केवल उनको बेहतरीन इलाज देंगी बल्कि अपने हुनर का भी विकास करेंगी। उनके द्वारा दफ्तर से बाहर आकर ओपीडी में बैठने, लेबर रूम, ऑपरेशन थियेटर तथा वार्डों में जाने से मरीजों को तो प्रत्यक्ष लाभ होगा ही, साथ में अस्पताल के पूरे स्टाफ पर भी उनका प्रभाव पड़ने से वे

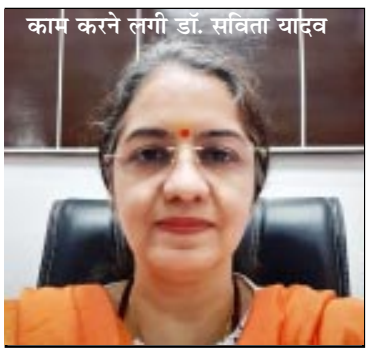
काम करने लगी डॉ. सविता यादव

भी चुस्त-दुरुस्त होकर काम करने लगेंगे। जाहिर है कि इसके चलते अस्पताल के प्रशासन में काफ़ी सुधार हो पायेगा।

'मज़दूर मोर्चा' का उद्देश्य कभी भी उनको व्यक्तिगत रूप से टारगेट करने की बजाय उनकी योग्यता एवं हुनर का सही इस्तेमाल कराना रहा है जो कि अब तक व्यर्थ जाता रहा है। संदर्भवश उनसे अपेक्षा है कि प्रसूति वार्ड में कुछ कर्मचारियों द्वारा की जा रही लूट कमाई एवं ब्लैकमेलिंग पर वे अंकुश लगायेंगी। इमरजेंसी वार्ड में फिलहाल जो गदर मचा हुआ है उस पर भी वे गौर करके उचित समाधान करेंगी। थोड़ा सा भी प्रयास करने पर वे आसानी से समझ पायेंगी कि इस वार्ड का सत्यानाश करने की जड़ में असल बीमारी तो खुद इसका इंचार्ज डॉक्टर गौड़ है। विश्वस्त जानकारी के अनुसार डॉ.गौड़ ड्यूटी समय के दौरान प्राय: अस्पताल के बाहर अपनी गाड़ी में ही मस्त बने बैठे रहते हैं।

पुख्ता जानकारी के अनुसार अस्पताल के कुछ कर्मचारी कुछ ऑटो रिक्शा वालों से 100-150 रुपये लेकर इमरजेंसी के बाहर खड़ा होने देते हैं ताकि जरूरतमंद मरीजों को तुर्त-फुर्त झपट सकें। लगभग ऐसा ही कुछ हाल निजी एम्बुलेंस ड्राइवरों का भी है। ये दलालों की तरह बड़े व्यापारिक अस्पतालों के लिये मरीज पटा कर ले जाने का ही काम करते हैं। इन्हें अस्पताल स्टाफ़ का भी पूरा सहयोग रहता है। इसके अलावा पूरे परिसर में जिस तरह से वाहन खड़े रहते हैं उस पर भी गौर करने की आवश्यकता है।

रोस्टर में नाम न होने के बावजूद किरण, अजीत व देवेन्द्र अस्पताल में कैसे हैं तैनात ?

अस्पताल में मरीजों का शिकार करते शिकारी

किरन

अजीत

देवेन्द्र

फ़रीदाबाद (म.मो.) विदित है कि बीके अस्पताल में विभिन्न कामों जैसे कि सफ़ाई, इलेक्ट्रीशियन, पलम्बर, कम्प्यूटर ऑपरेटर तथा सिक्यूरिटी आदि के लिये 100 से भी अधिक कर्मचारी एक ठेकेदार द्वारा सप्लाई किये जाते हैं। इसी कम्पनी द्वारा किरण, अजीत व देवेन्द्र भी कभी सप्लाई किये गये थे। इन कर्मचारियों का बाकायदा एक रोस्टर हर तीसरे महीने अस्पताल द्वारा बनाया जाकर सरकारी खाजाने से इनका वेतन निकाला जाता है। इस मामले में हुए एक बहुत बड़े घोटाले का पर्दाफाश 'मज़दूर मोर्चा' ने 13-19 जून, 2021 अंक में किया था। इसे लेकर बैठाई गई जांच अभी तक ठंडे बस्ते में पड़ी है।

उस बड़े घोटाले की चौधरन किरण रही है। कभी खुद ठेका कर्मचारी के तौर पर इस अस्पताल में आई किरण अब यहां अपने आप को अपने साथी कर्मचारियों की न केवल सुपरवाइजर बताती है बल्कि उनकी नेता होने का भी दावा करती है। सितम्बर 2022 तथा जनवरी 2023 में बने रोस्टरों में इस किरण तथा इसके दोनों सहयोगियों अजीत व देवेन्द्र के नाम नहीं हैं। नाम नहीं है तो ये अस्पताल के किसी भी खाते में नहीं होने के चलते वेतन भी नहीं पा सकते। ऐसे में फ़िर इन तीनों की तिकड़ी अस्पताल में किस हैसियत से चौधरी बनी घूमती है? किस हैसियत से अपने साथी कर्मचारियों पर रौब गांठते हैं?

प्रसूति विभाग तो मानो पूर्णतया किरण की निजी जागीर हो गया है। इस वार्ड में तमाम तैनातियां किरण के आदेश पर ही होती हैं। विदित है कि सबसे अधिक लूट कमाई वाला यह प्रसूति वार्ड ही है। किरण यहां पर उन्हीं लोगों को तैनात करती हैं जो उसे अधिकतम कमाई करके दे। अपनी चौधर को बरकरार रखने तथा पूरे स्टाफ़ पर अपना रुतबा बनाये रखने के लिये किरण को सदैव पीएमओ डॉ. सविता के आसपास मंडराते देखा जा सकता है। जब भी कभी डॉ. सविता अस्पताल में घूमती हैं तो किरण उनके साथ ठीक ऐसे चलती है जैसे कि वह उनकी परसनल सेक्रेट्री हो। किरण के इस मुकाम तक पहुंचने में पूर्व सिविल सर्जन गुलशन अरोड़ा का बहुत बड़ा हाथ रहा है। गुलशन अरोड़ा का उस पर मेहरबान होना तो खूब अच्छी तरह समझ आता है, परन्तु डॉ. सविता के साथ उसका चिपके रहना समझ से बाहर है। उसके इस तरह चिपके रहने से डॉ. सविता को मुफ्त की बदनामी के अलावा कुछ भी मिलने वाला नहीं।

31 दिसम्बर को रात्रि 10:57 पर बीके अस्पताल में मरीज को टीका लगाता सफाईकर्मी अमित

जान बचाकर यूक्रेन से लौटे मेडिकल छात्र फ़िर से फसने को वहीं भेजे गये

फ़रीदाबाद (म.मो.) फ़रवरी 2022 में यूक्रेन-रूस युद्ध के चलते करीब 25 हजार भारतीय मेडिकल छात्र रोते-पीटते व मरते-गिरते व लाखों रुपया खर्च करके भारत लौटे थे। छात्रों पर छाई उस वक्त भयंकर आपदा में भी यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी छवि निखारने का अवसर ढूंढ ही लिया था। प्रचारित कराया गया कि मोदी ने युद्धरत दोनों देशों को कह कर, तब तक के लिये युद्ध रुकवा दिया था जब तक कि वे अपने भारतीय छात्रों को वहां से सुरक्षित न निकाल लें।

सर्वविदित है कि भारतीय दूतावास की जिस लापरवाही तथा उदासीनता के चलते भारतीय छात्र दुर्दशा का शिकार होते हुए देश लौटे थे, उसके लिये मोदी सरकार ही जिम्मेवार थी। सरकार द्वारा दूतावास के माध्यम से, समय रहते जो प्रबन्ध किये जाने चाहिये थे वे नहीं किये गये थे। जब अधिकांश छात्र वहां से जैसे-तैसे निकल लिये तो मोदी ने उनकी निकासी की नौटंकी शुरू की। शुरू में एयर इंडिया ने मजबूर छात्रों से दोगुणे से चौगुणे तक भाड़ा वसूला। बाद में जब मोदी सरकार की थू-थू अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होने लगी तो इन्होंने कुछ जहाज भेजे थे। इन जहाजों में तैनात केन्द्रीय मंत्री छात्रों से मोदी जी के पक्ष में नारे लगवाते भी देखे गये थे।

भारत लौटने के बाद उन छात्रों की दुर्दशा का दूसरा दौर शुरू होने में कोई देर नहीं लगी। मेडिकल शिक्षा व्यापारियों के दबाव के चलते इन छात्रों को न तो किसी मेडिकल कॉलेज में एडजस्ट किया गया और न ही ऑनलाइन पढाई के साथ-साथ स्वदेशी अस्पतालों में कुछ सीखने की इजाजत दी गई। बंगाल की ममता सरकार ने इन छात्रों को अपने यहां एडजस्ट करने का बहुत प्रयास किया था। लेकिन चिकित्सा व्यापार में लगे व्यापारियों के दबाव में मोदी सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय ने इसकी इजाजत नहीं दी। शिक्षा व्यापारियों की तकलीफ यह है कि छात्र उनके यहां पढने के बजाय विदेश क्यों जाते हैं? विदित है कि भारत में जो पढ़ाई एक करोड़ में होती है वहीं यूक्रेन जैसे देशों में 20 लाख में हो जाती है। कुल मिलाकर पांच साल की पढ़ाई में यहां पांच करोड़ तो वहां एक करोड़ में ही काम निपट जाता है।

एक साल से अधिक भटकने व धक्के खाने के बाद इन मजबूर छात्रों को फ़िर से बाहर जाने की तैयारी करनी पड़ी। ये छात्र यूक्रेन के बजाय अन्य देशो में जाना चाहते थे, लेकिन इन्हें तंग करने के लिये मोदी सरकार ने आदेश दिया कि इन्हें यूक्रेन के कॉलेजों से ही अपना पाठ्यक्रम पूरा करना होगा। इसे लेकर कुछ लोग सुप्रीम कोर्ट पहुंचे तब जाकर इन्हें राहत मिली कि वे किसी भी देश के कॉलेजों से अपना शेष पाठ्यक्रम पूरा कर सकते हैं। जो छात्र इस राहत की प्रतिक्षा नहीं कर सके वे जुलाई 2022 से वापस यूक्रेन लौटते गये लेकिन शेष बचे करीब 75 प्रतिशत छात्र उजबेकिस्तान जैसे अन्य देशों में, जहां जगह मिली वहां चले गये। सेक्टर 17 निवासी राजेन्द्र शर्मा एडवोकेट ने बताया कि सर्वोच्च अदालत से राहत मिलते ही उन्होंने अपनी बेटी का दाखिला उजबेकिस्तान में करा दिया। इस सारे खेल में बेटी का जहां डेढ साल बर्बाद हो गया वहीं करीब एक करोड़ का खर्चा अलग से लग गया।

दूसरी ओर फिलिपींस, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलांका तथा मिस्र जैसे छोटे देशों ने यूक्रेन से लौटे तमाम मेडिकल छात्रों को अपने यहां एडजस्ट कर लिया। विश्वगुरु बनने का ढोंग रचने वाला भारत ही एक मात्र देश है जो अपने इन छात्रों को केवल इस लिये एडजस्ट नहीं कर सका कि कहीं इससे शिक्षा व्यापारियों की लॉबी नाराज न हो जाये।

निगमायुक्त लम्बी छुट्टी पर, चार्ज निगमायुक्त मानेसर को

फ़रीदाबाद (म.मो.) खट्टर सरकार कर दाता के धन को बर्बाद करने का कोई मौका छोड़ने वाले नहीं है। यहां के निगमायुक्त 15 दिन की छुट्टी पर चल रहे हैं। उनकी गैरहाजिरी में निगम का चार्ज शहर में मौजूद उपायुक्त, अतिरिक्त उपायुक्त, 'हूडा' प्रशासक, तथा निगम में ही बतौर अतिरिक्त निगमायुक्त तैनात आईएएस अधिकारी को न देकर मानेसर के निगमायुक्त को दिया गया है। रोजमर्रा की डाक आदि पर उनके दस्तखत कराने के लिये एक अधिकारी रोजाना सरकारी वाहन से डाक लेकर मानेसर जाता व आता है।

इससे पहले भी कई बार निगमायुक्त की गैरहाजिरी में अतिरिक्त चार्ज यहां के उपायुक्त अथवा 'हूडा' प्रशासक को दिया जाता रहा है। यह डबल चार्ज कई-कई महीनों तक भी चलता रहा है। ऐसा अक्सर तब होता रहा है जब सरकार यही तय न कर पाती थी कि निगमायुक्त किसे तैनात किया जाये। समझा जा सकता है कि ऐसी लावारिस हालत में निगम प्रशासन कैसा चलता होगा?

हर रोज 50-60 किमी दूर मानेसर तक डाक लाने ले जाने पर कितना सरकारी धन व्यर्थ जाता है, समझा जा सकता है। परन्तु खट्टर को क्या जरूरत है इसे समझने की, उनके घर से क्या जाता है? इसी को तो कहते हैं माल-ए-मुफ्त दिल-ए-बेरहम।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया।